विद्यागुरु विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के संघस्थ शिष्य

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

धर्मोदय साहित्य प्रकाशन

सागर (म. प्र.)

- **पावन प्रसंग** : आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का 42 वां मुनि दीक्षा दिवस
- **कृति** : विद्यागुरु विधान
- **रचयिता** : मुनि श्री 108 सुव्रतसागरजी महाराज
- **संस्करण** : प्रथम, जून 2009
- **आवृत्ति** : 2200 प्रतियाँ
- **लागत मूल्य** : 10/-
- **प्राप्ति स्थान** : धर्मोदय साहित्य प्रकाशन
  सागर (म. प्र.)
  094249-51771
- **मुद्रक** : विकास ऑफसेट, भोपाल

दो शब्द

वर्तमान के सर्वश्रेष्ठ परम पूज्य दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज आगम के अनुसार चर्या रखने वाले होने के कारण भक्तों की आस्था के केन्द्र हैं। भक्त अपनी भक्ति को प्रदर्शित कैसे करे, उनका गुणानुवाद कैसे करे? इस गुणानुवाद को कर्म निर्जरा तथा पुण्य संचय का साधन कैसे बनाये? इसलिए गुरुभक्ति से ओतप्रोत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज ने 'विद्यागुरु विधान' की रचना कर भव्य जीवों के ऊपर परम उपकार किया है। इस विधान में 9, 18, 36=63 अर्घ हैं अर्थात् हम आपस में 36 का आंकड़ा त्यागकर 63 का अर्थात् मेल-मिलाप का भाव बनायें। इस विधान को करके लाखों भक्तजन पुण्य सम्पादन करेंगे। मैं गुरुभक्ति से ओतप्रोत 'विद्यागुरु विधान' प्रकाशित करके कृतकृत्य हूँ।

ब्र. डॉ. भरत जैन

विद्यागुरु विधान

स्थापना

नन्दन हैं तीर्थेश के, भवसागर के पार।
विद्या गुरु ज्ञानेश को, नमन अनन्तोबार॥

(मेरी भावनावत्)

हे विद्या गुरु! हे विद्या गुरु! करें आपका हम वन्दन।
नहीं भरे मन वन्दन से तो, करें आपकी पद पूजन॥
पूजन करके भी प्यासा मन, खाली - खाली सा रहता।
तभी भक्ति के इस साधन से, गुण गाकर मन खुश रहता॥1॥
हमने गुरुवर यही सुना कि, गुणी बनें गुण गाकर के।
पाप गले झट मिले सफलता, गुरुचरणों में आकर के॥
तभी लिखें हम मानस तल पर, विद्या नाम महा न्यारा।
आओ गुरुवर! इस आसन पर, करें समर्पण हम सारा॥ 2॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् । अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

(पुष्पाञ्जलिं)

नीर तीर दे पीर चीर दे, प्राणी को सुख दे पानी।
उदक फुदक कर जल मल हरता, पयस् सरस जग कल्याणी॥
किन्तु कभी ये घातक भी हों, इस पर अपना ध्यान नहीं।
लेकिन प्रासुक जल से गुरु की, पूजा दे वरदान सही॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं .....

छेदन भेदन ताड़न में भी, सदा महकता चन्दन है।
किन्तु आग में राख बने फिर, निज गुण खोता चन्दन है॥
लेकिन गुरु हर दिशा दशा में, धैर्य धार समता ध्याते।
तभी आपके चरणों में हम, चन्दन वन्दन को लाते॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागरजी मुनीन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं .....

ये संसार चक्र है देखो, कुछ भी यहाँ अवस्थित ना।
धन दौलत कुर्सी के खातिर, भ्रात भ्रात में बैर तना॥
तभी आप ये जग माया तज, बनें निरम्बर अविकारी।
अक्षयपद के तुम अभिलाषी, मोक्ष राज्य के अधिकारी॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तयेऽक्षतान् .....

जिसने लाँघीं सब सीमाएँ, सब पर रौब जमाता जो।
सब पर अपना हुकुम चलाता, कामदेव कहलाता वो॥
किन्तु आपसे वही हारकर, चरणों में टेके माथा।
वाह ! वाह ! उस ब्रह्मचर्य की, अर्चन कर गायें गाथा॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं .....

सारा जग खाने को जीता, पर तुम जीने को खाते।
उस पर भी संयम पालन को, भांति भांति तप अपनाते॥
भोजन त्याग भजन करते हो, ज्ञानामृत का पान करो।
ज्ञानामृत गुरु हमें पिलाकर, भूख प्यास दुख शान्त करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं .....

मोह धुन्ध भव कन्द मोह है, दन्द - फन्द दुर्गन्ध नशा।
धूप भूख विष-कूप भूप है, मोह-चोर चहुँ ओर बसा॥
बन वैरागी ज्ञान-कला से, आप किये हल इन सबका।
दीपक से हम करें आरती, मिटे अँधेरा भव - भव का॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं .....

फूलों का जो सार इत्र वह, घर आँगन जग महकाता।
किन्तु देह को छूकर क्षण में, मल जैसा वह बन जाता॥
जो चारित्र सार जीवन का, वो तुम पाकर महक रहे।
धूप चढ़ाकर गुरु चरणों में, खुशी-खुशी हम चहक रहे॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं .....

फल से फसल फसल से फल हों, प्रथम कौन यह पता नहीं।
किन्तु परस्पर कारण बनते, कर्म कर्म फल कथा यही॥
कर्म - कर्म फल तुम्हें न रुचते, तुम्हें मोक्ष फल को पाना।
यही हमारी भी इच्छा है, फल अर्पित कर फल पाना॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय मोक्षमहाफल-प्राप्तये फलं .....

अर्घ चढ़ाने वालों को गुरु, बस ऐसा वरदान रहे।
नयनों में हो चित्र आपका, होठों पर गुरुनाम रहे॥
कान आपकी सुने कहानी, मन में गुरु का ध्यान रहे।
गात-माथ गुरु सेवा में हो, साँस - साँस गुरु नाम रहे॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तयेऽर्घं .....

जयमाला

(दोहा)

गुण पाना दुर्लभ रहा, बहुत कठिन गुणगान।
गुण पाने गुण गा रहे, जयमाला के नाम॥

(ज्ञानोदय)

सारी की सारी यह दुनियाँ, अटक रही जब भोगों में।
तभी आप भोगों को तजकर, मगन रहो निज योगों में॥
दुनियाँ में गुरु ऐसे रहते, कीच बीच ज्यों कमल रहे।
जंगदार लोहे जैसे हम, तुम सोने से अमल रहे॥ 1॥

दिन में हम सारे जग वाले, दुखवर्धक ही काम करें।
और रात को चूर-चूर हो, सुख नाशक आराम करें॥
किन्तु आप दिन में तत्त्वों के, राज समझते समझाते।
और रात में सावधान हो, ध्यान लगाते सुख पाते॥ 2॥

ठण्डी से डरकर हम भागें, शीत लहर से जब काँपें।
कोट रजाई गद्दा कंबल, तरह-तरह से तन ढाँकें॥
किन्तु आप तो रहो निरम्बर, और खुले नभ में सोते।
देख आपकी कठिन साधना, कर्म काँप फक-फक रोते॥ 3॥

गर्मी से जब ताल तलैया, नदी सरोवर सूख रहे।
हरियाली का नाम न दिखता, ठूँठ ठूँठ से रूख रहे॥
दुनियाँ वाले पंखा कूलर, ए.सी. में आराम करें।
तभी आप तन से ममता तज, उच्च शिखर पर ध्यान करें॥ 4॥

वर्षा की क्या बात कहें हम, वर्षा ऋतुओं की रानी।
बिजली बादल इसी बहाने, पद प्रक्षाल करे पानी॥
जहाँ इन्द्रियाँ इस दुनियाँ पर, हुकुम चलाती मनमानी।
वहीं इन्द्रियाँ देख साधना, हो जाती पानी-पानी॥ 5॥

नाथ हमारी विनती सुनकर, हमें निहारो अपनाओ।
विद्यारथ पर हमें बिठाकर, मोक्ष महल तक पहुँचाओ॥
बस इतना सा काम करा दो, फिर ना भीड़ बढ़ाएंगे।
ना पकड़ेंगे पाँव आपके, ना ही शोर मचाएंगे॥ 6॥

काम हमारा नहीं हुआ तो, बार - बार आना होगा।
भीड़ बढ़ाना भजन सुनाना, चरणों को छूना होगा॥
करें समर्पित ''सुव्रत'' सब कुछ, समाधान तुम प्रश्नों के।
धरती अम्बर रोशन तुमसे, आन वान तुम जश्नों के॥

(दोहा)

सरल रहा बनना गुणी, दुर्लभ है गुणगान।
पाकर गुरु आशीष हों, सभी कार्य आसान॥

ॐ ह्रूं आचार्य परमेष्ठिन् ! गुरुवर श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घं....

विद्या विद्या दे करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजन गुरुनाम॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, हे विद्या गुरुराय॥

(पुष्पाञ्जलिं)

अथ प्रथमवलयपूजन

स्थापना

नन्दन हैं तीर्थेश के, भवसागर के पार।
विद्या गुरु ज्ञानेश को, नमन अनन्तोबार॥

(मेरी भावनावत्)

हे विद्या गुरु! हे विद्या गुरु! करें आपका हम वन्दन।
नहीं भरे मन वन्दन से तो, करें आपकी पद पूजन॥
पूजन करके भी प्यासा मन, खाली - खाली सा रहता।
तभी भक्ति के इस साधन से, गुण गाकर मन खुश रहता॥1॥
हमने गुरुवर यही सुना कि, गुणी बनें गुण गाकर के।
पाप गले झट मिले सफलता, गुरुचरणों में आकर के॥
तभी लिखें हम मानस तल पर, विद्या नाम महा न्यारा।
आओ गुरुवर! इस आसन पर, करें समर्पण हम सारा॥ 2॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥(पुष्पाञ्जलिं)

नीर गरम हो अथवा ठण्डा, किन्तु बुझाता आग सदा।
गुरुवर का तो नाम मात्र ही, जनम मरण की हरे व्यथा॥

बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं ....

गुरु गुण कीर्तन की सौरभ बिन, निन्दा की दुर्गन्ध मिली।
गुरु गुण गाकर गुरु गुण पाकर, आतम की हर कली खिली॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं .....

हालातों ने हमको बदला, अब हालात बदलना है।
हँसी खुशी गुरु-पद में रमकर, खुद से खुद को मिलना है॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तयेऽक्षतान् .....

चाह वासना वस्त्र त्यागकर, परम सभ्य गुरु बन बैठे।
अंगारों को फूल बनाया, सो हम सबने सिर टेके॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं .....

स्वयं नाचती हमें नचाती, मिलें रोटियाँ मुश्किल से।
गुरु वाणी तो भूख मिटाती, पार निकाले दल दल से॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं .....

जिन आँधी या तूफानों ने, बुझा दिये दीपक अपने।
वही आपका दीप जलाकर, पथ दे पूर्ण करें सपने॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं .....

कर्म रुलाते हमें छकाते, भव भव में दुख दिलवाते।
किन्तु तपस्या देख आपकी, खुद चक्कर में पड़ जाते॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं .....

फल खाने का फल क्या होगा, कौन समझ ये पाये हैं ?
यही समझने फल के त्यागी, शिव फल पर ललचाये हैं॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षमहाफल-प्राप्तये फलं .....

कंकर करे समुन्दर चंचल, कोयल वन स्वरवान करे।
गुरुपद में यह अर्घ भेटना, भक्तों को भगवान करे॥
बने जितेन्द्री जीत कषायें, मान हमारा चूर करो।
मन मन्दिर में विद्यागुरुवर, आओ वास जरूर करो॥

ॐ ह्रूं कषायजिताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तयेऽर्घं .....

अथ प्रथम वलय - अर्घावली

(तर्ज-देव-शास्त्र-गुरु पूजनवत्)

1. हास्य नोकषाय

शुभ कर्म का पाकर उदय, मुस्कान पाये आप जो।
वह भक्त जन के रोग दुख को, दूर करती पाप को॥
वह पुण्यवानों को मिले बस, कीमती मुस्कान जो।
गुरु की हँसी दिल में वसी है, भक्त जन के प्राण वो॥

(दोहा)

हास्य कषायों के जयी, दे दीजे मुस्कान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्या गुरु भगवान॥
हमें अपने सम कर लीजे, कृपा गुरु यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं हास्यपरिहास्य दुःख विनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

2. रति नोकषाय

रति के उदय में जीव सारे, राग विषयों से करें।
उसके जयी गुरुदेव न्यारे, राग आतम से करें॥
गुरु की लगन को देख प्राणी, सीखते उत्साह को।
आलस्य तज कर्त्तव्य पथ पर, चल हरे दुख दाह को॥
सरति कषायों के जयी, हरिए रति दुख हान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्या गुरु भगवान॥
हमें अपने सम कर लीजे, कृपा गुरु यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं विषयानुराग विनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

3. अरति नोकषाय

अलगाव जिससे जन्म लेता, अरति वह दुष्कर्म है।
गुरुद्वेष आदिक के विजेता, बाँटते सुख धर्म है॥
सबके दिलों में राज जिनका, द्वेष का क्या काम है।
मन की तरंगें मारने गुरुदेव शान्त सुधाम हैं॥
अरति कषायों के जयी, हरो अरति की खान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्यागुरु भगवान।
हमें अपने सम कर लीजे, कृपा गुरु यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं अपमान तिरस्कार विनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

4. शोक नोकषाय

जिसके उदय से प्राणियों को, क्लेश हो, वो शोक है।
संक्लेश के विजयी जयी का, रूप पूज्य अशोक है॥
सब प्राणियों का शोक हरते, प्रेम का सिंचन करें।
पाने विशुद्धी पूजिए गुरुदेव भव क्रन्दन हरें॥
शोक कषायों के जयी, हरो शोक शैतान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्यागुरु भगवान॥
हमें अपने सम कर लीजे, कृपा गुरु यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं शोक संताप विनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

5. भय नोकषाय

संज्ञा तथा भय की कषायें, छीन लें सुख चैन को।
गुरुदेव की इन पर विजय, आदर्श हैं हर जैन को॥
गुरुदान देते हैं अभय का, आप निर्भय रूप हैं।
झुकते तभी तो गुरु-पदों में जो शहंशा भूप हैं॥
सभय कषायों के जयी, हरिए भय बलवान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्यागुरु भगवान॥
हमें अपने समकर लीजे, कृपा गुरुयही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं सप्तभयविनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

6. जुगुप्सा नोकषाय

पैदा घृणा जिस कर्म से वो, ही जुगुप्सा ग्लानि है।
इस कर्म से सब प्राणियों को, हानि ही बस हानि है॥
आचार्य इसको जीत लेते, इसलिए अनुराग है।
यों जो सदाचारी उन्हीं से, बस थमा वैराग्य है॥

ग्लानि जुगुप्सा के जयी, हरो ग्लानि अज्ञान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्यागुरु भगवान।
हमें अपने सम कर लीजे, कृपा गुरु यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं ईर्ष्या-घृणाविकारविनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

7. स्त्रीवेद नोकषाय

संसार की नारी जनों के, भाव तुमने तज दिये।
पर मुक्ति रानी प्राप्त करने, भारती माँ भज लिये॥
आराधना के साधना के, अर्चना के गीत हो।
सुर नारियों की भावना के, हृदय मन के मीत हो॥
स्त्री वेद के गुरु जयी, हरो भाव मन म्लान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्या गुरु भगवान॥
हमें अपने सम कर लीजे, कृपा बस यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं समस्तविधकुशीलपापविनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

8. पुरुषवेद नोकषाय

बन के पुरुष पुरुषार्थ करते, काम क्या पुरुषत्व का ?
करुणा दया धारी विरागी, ध्यान करते स्वत्व का॥
अधिकार को माँगो नहीं, कर्त्तव्य ही सत्कार हो।
तुम वेद-ना देखो कभी, पर वेदना हर्त्तार हो॥
पुरुष वेद के गुरु जयी, हरो भाव मन म्लान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्यागुरु भगवान॥
हमें अपने सम कर लीजे, कृपा बस यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं समस्तविधअत्याचारविनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

गुरु तो नपुंसक भाव तज के, हैं अहिंसक शूर जी।
बन के दिगम्बर हो निरम्बर, दो सुखों की पूर जी॥
तज भेद का अज्ञान तुम तो, भेद विज्ञानी हुये।
अज्ञान कायरता नहीं सो, पद सभी प्राणी छुये॥
वेद नपुंसक के जयी, हरो नपुंसक ज्ञान।
भक्तों की अर्जी सुनो, विद्यागुरु भगवान॥
हमे अपने सम कर लीजे, कृपा बस यही कृपा कीजे॥

ॐ ह्रूं भीरुत्वभावविनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

अथ प्रथमवलय जयमाला

सच्ची सुन्दरता मिले, नशती सभी कषाय।
गुणमाला के नाम हम, गुरु गीता मन लाय॥

(सुविद्या छन्द) लय, बड़ी बारह भावना

पूज्य गुणों के ज्ञान बिना हम, पाये निंदित ज्ञान।
गुण गाये बिन गुण गण पाना, नभ के पुष्प समान॥
पर निंदा चुगली हम करते, मन में धर अभिमान।
विजय बुराई पर पाने को, गुरुवर दो गुणखान॥ 1॥

मिथ्यादर्शन ज्ञान चरित को, तुमने दे दी मात।
सकल और नो जीत कषायें, करते सदा प्रभात॥
जो कषाय जल-रेखावत् है, उसका भी क्या काम।
नोकषाय का रंग न किंचित, तब ही तुम्हें प्रणाम॥ 2॥

गैरों पर गुरु कभी न हँसते, रखें न मन में गाँठ।
गैरों का दुख दूर भगाते, अजब आपका ठाठ॥
आप हँसो तो जग हँस जाये, वाह ! वाह ! मुस्कान।
पल दो पल की हँसी कीमती, पथ औषध दे दान॥ 3॥

शीत अमरकण्टक में सहते, बिना चटाई ओढ़।
गर्मी में कुण्डलपुर प्यारा, असन करो रस छोड़॥
छाले फोले वाले भी हों, थके-पाँव विन्यास।
धूल रेत गिट्टी शूलों पर, चलकर नहीं निराश॥ 4॥

सौरभ या दुर्गंध एक सी, सिकुडाते ना नाक।
निंदा पूजा में समता धर, गजब आपकी धाक॥
नहीं उठाओ नजरें तुम तो, नजर नासिका ओर।
सबकी झोली पूरी भरते, करते भाव विभोर॥ 5॥

जग से है अलगाव आपका, खुद से बढ़ा लगाव।
गुजर गये का शोक न करते, भय का नहीं दबाव॥
देख मूत्र मल कभी न थूँको, नहीं घृणा की रेख।
तीन वेद का भेद त्याग कर, साधन बड़ा विवेक॥ 6॥

आप कषायों के विजयी हो, हमें जीतना येह।
बस मुस्कान आपकी पाकर, जय हो निस्संदेह॥
टले अमंगल होगा मंगल, खिलें भक्ति के फूल।
दिवस दशहरा रात दिवाली, पाके गुरुपद धूल॥

बिना गुणी सौन्दर्य यह, दुख का है भण्डार।
गुरु-गुण गाता को मिले, सुखद जगत का सार॥

ॐ ह्रूं संसारमूलकषाय विनाशन समर्थ आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

भक्ति भाव से जो करे, गुरु पूजा जयमाल।
झूला झूले हर्ष का, छूटे जग जंजाल॥
विद्या विद्या दे करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत गुरु नाम॥

(शांतिधारा .....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, हे विद्यागुरु राय॥

(पुष्पाञ्जलिं ....)

अथ द्वितीयवलय पूजन

स्थापना

नन्दन हैं तीर्थेश के, भवसागर के पार।
विद्या गुरु ज्ञानेश को, नमन अनन्तोबार॥

(मेरी भावनावत्)

हे विद्या गुरु! हे विद्या गुरु! करें आपका हम वन्दन।
नहीं भरे मन वन्दन से तो, करें आपकी पद पूजन॥
पूजन करके भी प्यासा मन, खाली - खाली सा रहता।
तभी भक्ति के इस साधन से, गुण गाकर मन खुश रहता॥1॥
हमने गुरुवर यही सुना कि, गुणी बनें गुण गाकर के।
पाप गले झट मिले सफलता, गुरुचरणों में आकर के॥
तभी लिखें हम मानस तल पर, विद्या नाम महा न्यारा।
आओ गुरुवर! इस आसन पर, करें समर्पण हम सारा॥ 2॥

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर जी मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥ (पुष्पाञ्जलिं)

जन्म हुआ तो हुआ दाखिला, महा पढ़ाई जीवन हो।
मरण परीक्षा सफल बनाने, रत्नत्रय जल साधन दो॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे, अब तो हमें निहारो रे।
भव सागर से नाव हमारी, थोड़ी पार उतारो रे॥

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन वन में साँपों का भय, फिर भी सुरभित चन्दन है।
गुरु वन्दन के चन्दन वन में, साँप त्यागते क्रन्दन है॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं .....

पुत्र सम्पदा भोग कामना, गुरु ने त्यागे दूषण हो।
अक्षय पद के अभिलाषी ही, जग के सांचे भूषण हो॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं .....

काम दाह से पीड़ित जग पर, गुरुवर कृपा बरस जाये।
खिले फूल मुरझाते जैसे, काम हमारा मुरझाये॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं .....

भूख भोग से यों भड़के ज्यों, घी से आग भड़क जाये।
त्याग तपस्या ज्ञानामृत दो, क्षुधा हरण को गुण गाये॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं .....

ग्रंथ ग्रंथियों के चक्कर में, मोह तिमिर बढ़ते जाते।
तभी आप निर्ग्रंथ दशाधर, मोह हरो वा नशवाते॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं .....

सुख दुख कर्मों की आकुलता, भेदभाव दुख की दात्री।
कर्म धूल के तजी आपको, पूजें धूप चढ़ा यात्री॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं .....

सांसारिक फल दुख के दाता, तुम्हें चढ़ाते सुख पाने।
यश आशा के त्यागी तुम तो, चलो मोक्ष फल को पाने॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं .....

श्रद्धा की नन्हीं आँखों में, महा रूप गुरु का उतरे।
वैसे मूल्य अर्घ का क्या हो, फिर भी आत्म रूप निखरे॥
गुरुवर हैं तीर्थङ्कर जैसे.....

ॐ ह्रूं निर्दोषाचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं .....

अथ द्वितीयवलय अर्घावली

(चौपाई+दोहा)

1. क्षुधा दोष

क्षुधा दोष अघ मूल बताया, जिनवर ने जो पूर्ण नशाया।
गुरु जय पाने करते अनशन, ऊनोदर रस त्याग अनेशन॥
ज्ञानामृत की धार से, निर्मल हो संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय-जय बारम्बार।

ॐ ह्रूं क्षुधाजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

2. तृषा दोष

भव सागर है, पर सब प्यासे, तृषा दोष ममता प्रभु नाशे।
तृषा विजय को समता धरते, गुरु सुख-दुख में खेद न करते॥
समता भरी फुहार से, शीतल हो संसार।
विद्या गुरु जयवन्त हों, जय जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं तृषाजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

3. जरा (बुढ़ापा) दोष

कहा बुढ़ापा मृतक समाना, इससे प्रभु का दूर ठिकाना।
गुरु कर्त्तव्य करें उत्साही, उन्हें जरा क्या जो जिनराही॥
साहस वा उत्साह से, मंगलमय संसार।
विद्या गुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं जराजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

4. रोग दोष

रोग वेदना चैन छीन ले, रोग रहित प्रभु जैन चीन ले।
रोग हरण को जिनश्रुत धारी, गुरुवर स्वस्थ शुद्ध अविकारी॥
जिन आगम की छाँव से, सुखी रहे संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं रोगजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

5. जन्म दोष

जन्मों की पीड़ा भयकारी, कह न सके प्रभु उसके हारी।
गुरुवर जन्म पीर हरने को, बनें निरम्बर भव तिरने को॥
जिनमुद्रा की नाव से, मिले पार संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं जन्मजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

6. मरण दोष

गाल काल का सब को लीले, जिनवर जीते मरण हठीले।
पण्डित पण्डित मरण मरण को,चाहे गुरुवर परम शरण को॥
दृढ़ निश्चय की मार से, मरे मरण संसार।
विद्या गुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं मरणजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

7. भय दोष

सात भयों से दुनियाँ मरती,भयजित ! प्रभु से निर्भय धरती।
भय-जय को गुरु मूर्च्छा त्यागे,अभय निलय पाने हम भागे॥
देख समर्पण त्याग को, निर्बल हो संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं भयजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

8. गर्व (घमण्ड) दोष

सारे मद मदमत्त बनाते, निर्मद जिनवर दोष नशाते।
मद तजने गुरु की तैयारी, सो त्यागी मन की बीमारी॥
मैत्री के समभाव से, गर्व नशे संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं घमण्डजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

9. द्वेष दोष

जले द्वेष ज्वाला में दुखिया, नाथ ! वीत-द्वेषी है सुखिया।
गुरुवर द्वेष जीतना चाहें, क्षमा नीर से तभी नहायें॥
द्वेष दैव्य का दर्प हर, हरा भरा संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं द्वेषजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

10. राग दोष

राग आग का सागर धधके, पूरा उसे सुखा प्रभु चमके।
पूज्य वीतरागी बनने को, आतुर हैं गुरु सब तजने को॥
राग राख हो दूर तो, चमक उठे संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं रागजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

11. मोह दोष

मोह नशे से जग पगलाये, निर्मोही प्रभु भरम नशाये॥
चले मोह जय को गुरु-गाड़ी, शील धर्म की संयम बाड़ी॥

अगर मोह पर्दा हटे, तो झलके संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय-जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं मोह जनित दुःख निवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

12. चिन्ता दोष

चिन्ता अपनी चिता जलाये, प्रभु मृत्युंजय उसे नशाये।
चिन्ता के साम्राज्य हरण को, निज में गुरु का सदा रमण हो॥
चिन्ता घुन जिसका टले, तो मीठा संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं चिन्ताजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

13. अरति दोष

अरति मार अलगाव बढ़ाती, अरति जीत प्रभु मोक्ष बराती।
अरति विजय को गुरुवर चलते, गुरु के चरण कल्पतरु फलते॥
अरति दोष से मुक्ति दे, प्रेम भरा संसार।
विद्या गुरु जयवन्त हो, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं अरतिजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

14. आश्चर्य दोष

चमत्कार लख विस्मय-जग को, जिनवर जीत चुके विस्मय को।
विस्मय जय गुरुवर की इच्छा, तब ही लिये दिगम्बर - दीक्षा॥
निजानन्द विस्मय हरे, नशे दुखद संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं आश्चर्यजनित दुःख निवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

15. निद्रा दोष

ज्ञान हिताहित निद्रा खोये, नींद वासना जित प्रभु होये।
नींद दोष गुरुवर को खोना, सोते हैं पर छोड़ बिछोना॥
नींद दोष की जीत से, रोशन हो संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं निद्राजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

16. खेद दोष

भूल-खेद से जग दुख पाये, भूल-खेद जिन नाथ नशाये।
पश्चाताप आग में जलते, खेद भूल हरने गुरु चलते॥
भूल खेद हो दूर तो, सुरभित हो संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं खेदजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

17. शोक दोष

डूबे लोक शोक सागर में,अशोक जिनवर हैं शिवपुर में।
क्लेष कष्ट गुरु शोक हरण को, धरें विशुद्धी सदाचरण को॥
शोक विजय मन मोद दे, करुणामय संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं शोकजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

18. पसीना दोष

तन मल में मल एक पसीना, सब मैले पर नाथ नगीना।
गुरु हरने को दोष पसीना, करें तपस्या बहा पसीना॥
हटे पसीना दोष तो, दर्पणवत् संसार।
विद्यागुरु जयवन्त हों, जय - जय बारम्बार॥

ॐ ह्रूं स्वेदजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

अथ द्वितीयवलय जयमाला

भक्ति भावना से दिखें, पत्थर में भगवान।
किन्तु मिले साक्षात् तो, क्यों न करे गुणगान॥

(विद्योदय छन्द -जंगल जंगल बात चली ....)

भक्ति पुष्प जिनके खिलते वे, गुलशन होते।
खिल उठते संसार उन्हीं के क्रन्दन खोते॥
वे संयम सौरभ से दुनियाँ महकाते हैं।
भक्तों के भगवान महागुरु कहलाते हैं॥ 1॥

विद्या गुरुवर भक्तों को शिव शंकर जैसे।
हम तो कहते गुरुवर को तीर्थङ्कर जैसे॥
समवसरण की शोभा ज्यों भगवन से होती।
चतुर्संघ भक्तों की शोभा गुरु से होती॥ 2॥

नभ में चलते जिनवर तो सुर कमल रचाते।
गुरु स्वागत में भक्त भक्ति से चौक पुराते॥
बजे दुन्दुभी जैसे मंगल ढोल नगाड़े।
गुरु के आगे पीछे गूजें जय जय कारे॥ 3॥

होंठ हाथ पगतलियाँ प्रभु की यथा गुलाबी।
हाथ पाँव त्यों गुरुवर की मुस्कान गुलाबी॥
जिनवाणी सी गुरुवाणी है जग कल्याणी।
सुखकर विद्या के सागर का मीठा पानी॥ 4॥

खारे सागर डुबा डुबा के, सबको मारें।
विद्यासागर डुबा डुबा भव पार उतारें॥
इसीलिए तो तीर्थङ्कर सम गुरुवर लगते।
चरण शरण को पाने देखो हम सब भगते॥ 5॥

वही रूप है वही राह है, वही चाह है।
गुरु महिमा की होती जग में वाह ! वाह ! है॥
चन्दा सूरज तारे गुरु की करें आरती।
हमको विद्यारथ दे दो ओ! मोक्ष सारथी॥ 6॥

गुरुवर जिनवर से लगन, बनवा दे गुणवान।
भक्ति अर्चना पाठ दे, मुक्ति महल सोपान॥

ॐ ह्रूं समस्तदोषजनित दुःखनिवारणाय आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

सादर शीश झुकाइए, सविनय गाओ गीत।
विद्यागुरु पद धाम में, संयम का संगीत॥
विद्या विद्या दे करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतिधारा ..)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पदलाय।
भव दुःखों को मेट दो, हे विद्या गुरुराय॥

(पुष्पाञ्जलिं)

इति द्वितीयवलय समाप्तं ....

अथ तृतीयवलय पूजन

स्थापना

नन्दन हैं तीर्थेश के, भवसागर के पार।
विद्या गुरु ज्ञानेश को, नमन अनन्तोबार॥

(मेरी भावनावत्)

हे विद्या गुरु! हे विद्या गुरु! करें आपका हम वन्दन।
नहीं भरे मन वन्दन से तो, करें आपकी पद पूजन॥
पूजन करके भी प्यासा मन, खाली - खाली सा रहता।
तभी भक्ति के इस साधन से, गुण गाकर मन खुश रहता॥1॥

हमने गुरुवर यही सुना कि, गुणी बनें गुण गाकर के।
पाप गले झट मिले सफलता, गुरुचरणों में आकर के॥
तभी लिखें हम मानस तल पर, विद्या नाम महा न्यारा।
आओ गुरुवर! इस आसन पर, करें समर्पण हम सारा॥ 2॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्॥

(पुष्पाञ्जलिं)

भव तन में हम भटक रहे हैं, खारा भव जल गटक रहे।
आत्म संपदा से खाली पर, नाना विध हम मटक रहे॥
रत्नत्रय के सागर मीठे, अटकन, भटकन हर लीजे।
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं .....

संकट बैर विरोधों में गुरु, कभी नहीं विचलित होते।
ज्ञान ध्यान तप रत रह करके, अघ अज्ञान अनल खोते॥
साम्य भाव के सागर मीठे, व्याकुल मन शीतल कीजे।
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं .....

अस्त व्यस्त जीवन की चर्या, संयम से तुम स्वस्थ करो।
ख्याती पूजा लाभ त्याग कर, कर्म व्याधियाँ नष्ट करो॥
बन्दर जैसा मनवा हमरा, अपने चरण रमा लीजे।
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तयेऽक्षतान् .....

संयम में उपसर्ग परीषह, फूल शूल सम साथ डटे।
ज्यों ज्यों हो विपरीत दशाएँ, त्यों त्यों संयम महक उठे॥
गुरु अध्यात्म पुष्प से सुरभित, कामशूल अब हर लीजे।
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं .....

ज्यों पतंग को ढील मिले तो, आगे नीचे गिर जाती।
चपल इन्द्रियों से आतम त्यों, पाप गर्त में गिर जाती॥
उच्च तृप्त संयम से गुरुवर, क्षुधा व्यथा झट हर लीजे।
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं .....

हम अज्ञान अंधेरे में गुरु, भटक रहे मारे - मारे।
ज्ञान सूर्य हीरे मोती से, चमको तुम प्यारे - प्यारे॥

बुझे दीप ये जलें हमारे, ज्ञान जोत हमको दीजे॥
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं .....

धूप आग में थोड़ी महके, सो गुरु ने तज डाली वो।
कर्म धूप तप से महकाते, मोक्ष पहुँचने वाली जो॥
मोह - पास ज्यों तोड़ा तुमने, उससे हमें छुड़ा लीजे।
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं .....

देख आपकी त्याग साधना, ज्ञान-ध्यान वैराग्य खरा।
आँधी तूफां शीश झुकाते, स्वर्ग लोक भू पर उतरा॥
संयम फल खाने को आतुर, फल गुच्छे हमको दीजे।
करुणासागर विद्यागुरुजी, परमानंद हमें दीजे॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षमहा फल-प्राप्तये फलं .....

आठ आठ प्रवचन माँओं की, गोदी में करते क्रीड़ा।
आठ शुद्धि से आठ कर्म की, आठों याम हरो पीड़ा॥
अष्टांगी रत्नत्रयधारी, अष्टम भू को अर्चन हो।
अष्टद्रव्यमय अर्घ चढ़ाकर, विद्यागुरु को वन्दन हो॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुणसमन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तयेऽर्घं .....

अथ तृतीयवलय अर्घावली

(सुविद्याछन्द)

बारह तप

1. अनशन (उपवास) तप

चउ विध भोजन अशन कहा वो, त्याग कहा उपवास।
अनशन बेला आदिक करते, तप आचार्य सुखास॥
प्राणी इन्द्रिय संयम एवं कर्म निर्जरा हेत।
अनशन को हम संबल चाहें, श्रद्धा भक्ति समेत॥ 1॥

ॐ ह्रूं संबल प्रदायक अनशन तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

2. अवमौदर्य (ऊनोदर) तप

सहज भूख से कम खाना ही, तप है अवमौदर्य।
उत्तम मध्यम जघन्य करते, परमेष्ठी गुरुवर्य॥
दोष प्रशम हो संयम जागृत, हो समता स्वाध्याय।
ऊनोदर करना हम सीखें, गुरुवर करो सहाय॥ 2॥

ॐ ह्रूं लोलुपता दोषनाशक अवमौदर्य तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

3. वृत्तिपरिसंख्यान तप

नियम सहित आहार ग्रहण है, वृत्ती परिसंख्यान।
पुण्य परीक्षा कर्म निर्जरा, आशा जय है काम॥
ये तप करते साहस धरते, गुरु आचार्य उदार।
पुण्य बढ़ायें कर्म नशायें, दो हमको उपहार॥ 3॥

ॐ ह्रूं आसक्ति दोष नाशक वृत्तिपरिसंख्यान तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

4. रसपरित्याग तप

षट् रस तजकर भोजन करना, जानो रस परित्याग।
निद्रा प्रमाद रसना जय को, हो आगम अनुराग॥
रस त्यागी आतम अनुरागी, अमृत के भण्डार।
सरस ज्ञान का सुधा पिला दो, करुणा के अवतार॥ 4॥

ॐ ह्रूं प्रमाददोष नाशक - रस परित्याग तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

5. विविक्तशय्यासन तप

ज्ञान ध्यान तप आदि सिद्धि को, खोज क्षेत्र एकान्त।
पश्चिम रात शयन कुछ करना, या आसन हो शान्त॥
विविक्तशय्यासन तप करते, गुरु आचार्य महान।
चंचल चित्त शान्त करने को, दो विद्या वरदान॥ 5॥

ॐ ह्रूं चित्तचंचलता नाशक विविक्तशय्यासनतपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

6. कायक्लेश तप

देह सुखों को तज तप करना, काय-क्लेश विख्यात।
वर्षा में तरुतल तप करते, शीत नदी के पाट॥
ग्रीष्म धूप में, गिरि पर चढ़कर, करें सूर्य से बात।
दुख सहने को क्षमता दो गुरु, रख दो सिर पर हाथ॥ 6॥

ॐ ह्रूं आत्मबल विकासक कायक्लेशतपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

7. प्रायश्चित्त तप

अगर भूल या प्रमाद वश जो, लगे व्रतों में दोष।
उनको प्रायश्चित्त नशाता, कर देता निर्दोष॥
आगममय आचार्य यही तप, करें हरें अपराध।
विश्व शांति हो दूर भ्रांति हो, गुरु हर लो अपवाद॥ 7॥

ॐ ह्रूं अपराधनाशक प्रायश्चित्त तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

8. विनय तप

मोक्ष हेतु गुरु पूज्य जनों का, हो आदर सत्कार।
दर्शन ज्ञान चरित उपचारित, कहा विनय तप सार॥
चारों विध गुरु विनय पालते, विनय मोक्ष का द्वार।

रत्नत्रय की विनय सीख दो, हो मद का परिहार ॥ 8॥

ॐ ह्रूं घमण्ड नाशक विनय तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

9. वैय्यावृत्त तप

निज तन या प्रासुक चीजों से, करके सेवा कार्य।
संत त्यागियों की विपदाएँ, दूर करें गुरु आर्य॥
वैय्यावृत्त महातप दशविध, मैत्री का उपहार।
स्वार्थ त्याग की विद्या दे दो, करुणा का उपहार॥ 9॥

ॐ ह्रूं विपदानाशक वैय्यावृत्त तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

10. स्वाध्याय तप

प्रमाद तजना ज्ञान साधना, इच्छा करें निरोध।
स्वाध्याय तप पाँच प्रकारी, पढ़ते चउ अनुयोग॥
करें वाचना पाठ पृच्छना, चिन्तन दें उपदेश।
गुरु के चरण आचरण पढ़ के, मिले मोक्ष संदेश॥ 10॥

ॐ ह्रूं बुद्धिमन्दतानाशक स्वाध्याय तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

11. व्युत्सर्ग तप

अहंकार ममकार रूप जो, संकल्पों का त्याग।
तन ममता तज परमातम भज, निज से हो अनुराग॥
संग त्याग व्युत्सर्ग महा तप, करते कायोत्सर्ग।
धैर्य शक्ति साहस का दाता, गुरुवर का संसर्ग॥ 11॥

ॐ ह्रूं मूर्च्छानाशक व्युत्सर्ग तपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

12. ध्यान तप

तप का उपसंहार ध्यान है, ध्यान तपों का मूल।
एक विषय में चित्त रोकना, ध्यान ज्ञान का फूल॥
ध्यान अग्नि से कर्मेन्धन की, आर्य उड़ाते धूल।
विद्यागुरु को नमन ध्यान से, आगम के अनुकूल॥12॥

ॐ ह्रूं मनोविकारनाशक ध्यानतपोगुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

दशलक्षणधर्म

1. उत्तम क्षमाधर्म

आने पर उपसर्ग परीषह सुनने पर अपशब्द।
क्रोध हेतु में क्रोध न करते, ना होते स्तब्ध॥
क्षमा माँगते क्षमा बाँटते, क्रोध शत्रु हर्त्तार।
उत्तम क्षमावान गुरुवर दे, विद्या मेघ फुहार॥ 13॥

ॐ ह्रूं क्रोधविनाशक उत्तम क्षमा धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

2. उत्तम मार्दव धर्म

ज्ञान आदि का मद नहिं करते, जीते मान कषाय।
उत्तम मार्दव धर्म धुरन्धर, विद्यागुरु मन भाय॥
मक्खन-सा मन मधुर मुलायम, प्रेम दया के काज।
संयम पालन में हीरे सा, मद हरते यति राज॥ 14॥

ॐ ह्रूं निर्दयतानाशक उत्तम मार्दव धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

3. उत्तम आर्जव धर्म

मन के भाव कहें वचनों से, पालें तन अनुसार।
यथाजात बालक सम निश्छल, माया तजें विकार॥
कथनी करनी हंस समानी, बगुले का क्या कार्य।
उत्तम आर्जव धर्म धुरन्धर, विद्यागुरु आचार्य॥ 15॥

ॐ ह्रूं मायाचारीनाशक उत्तम आर्जव धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

4. उत्तम शौच धर्म

लोभ पाप का बाप त्याग के, यश आशा दी छोड़।
बने निरम्बर सदाचार की, आये चुनरी ओढ़॥
शुचिता पाने तजे नहाना, मैल बना शृंगार।
उत्तम शौच धर्म धारी गुरु, दो विद्या संस्कार॥ 16॥

ॐ ह्रूं अन्तरबाह्यमलनाशक उत्तम शौच धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

5. उत्तम सत्य धर्म

हित मित प्रिय गुरु सत्य बोलते, आगम के अनुसार।
दुखदायक तो सत्य न बोले, नहीं झूठ व्यवहार॥
सत्यान्वेषी सत्य धर्म की, करते उत्तम सेव।
सत्य प्राप्ति को सत्य वन्दना, दो विद्या गुरुदेव॥ 17॥

ॐ ह्रूं झूठपापविनाशक उत्तम सत्य धर्म गुण समान्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

6. उत्तम संयम धर्म

मन इन्द्रिय वश कर जीवों की, रक्षा का आधार।
उत्तम संयम कर्म नशाता, ले जाता भव पार॥
संयम रथ पर करो सवारी, चलो मुक्ति की ओर।
विद्या रथ पर हमें बिठाओ, ओ ! विद्या चितचोर॥ 18॥

ॐ ह्रूं स्वच्छन्दतानाशक उत्तम संयम धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

7. उत्तम तप धर्म

कर्म निर्जरा को तप तपते, मन के त्याग विकार।
भावी भोग कामना तज के, बारह तप आचार॥
सूर्य तेज भी फीका पड़ता, कर्म शैल हो चूर।

कंचन सी आतम करवा दो, उत्तम तपधर शूर ॥ 19॥

ॐ ह्रूं आपसी-तनावनाशक उत्तम तप धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

8. उत्तम त्याग धर्म

बाह्य भीतरी तजा परिग्रह, दिया हिताहित ज्ञान।
त्यागी जन को शिवपथ देकर, करते जग कल्याण॥
काँच कामिनी कंचन त्यागी, जैनाचार्य मुनीश।
संत शिरोमणि विद्यासागर, दो शिवपथ आशीष॥ 20॥

ॐ ह्रूं लोभदैत्यनाशक उत्तम त्याग धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

9. उत्तम आकिञ्चन्य धर्म

अस्त्र शस्त्र वस्त्राभूषण तज, त्याग दिया शृंगार।
अरे कहें क्या? तन की ममता, करते तुम परिहार॥
कोई नहीं किसी का अपना, ना अपना संसार।
खुद में स्वस्थ मस्त करवादो, विद्या-गुण भण्डार॥ 21॥

ॐ ह्रूं मृगतृष्णानाशक उत्तम आकिञ्चन्य धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

10. उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

शील शिरोमणि ब्रह्मचर्य व्रत, पावन नव विध धार।
वनिता तज विनती करते हो, ब्रह्मचर्य असि धार॥
कामदेव भी लज्जित होता, तुम्हें देख सिरताज।
हमको अपने रंग रँगा लो, विद्यागुरु ऋषिराज॥ 22॥

ॐ ह्रूं विवेकज्ञानविकासक उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

पञ्चाचार

1. दर्शनाचार

निश्शंकादिक आठ अंग मय, सम्यग्दर्शन स्वरूप।
खुद पालें सबसे पलवाते, दोष रहित चिद्रूप॥
पूज्य दर्शनाचार पूज लो, विद्यागुरु के धाम।
सदाचार के फूल खिला लो, करके विनत प्रणाम॥ 23॥

ॐ ह्रूं अन्यदर्शन भ्रान्ति विनाशक दर्शनाचार गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

2. ज्ञानाचार

तत्त्व द्रव्य का ज्ञानाराधक, जो है सम्यग्ज्ञान।
अष्टांगी पाले पलवा के, गुरु हरते अज्ञान॥
ज्ञानाचार अर्चना कर लो, विद्यागुरु के धाम।
सदाचार के फूल खिला लो, करके विनत प्रणाम॥ 24॥

ॐ ह्रूं मिथ्याज्ञान भ्रान्ति विनाशक ज्ञानाचरण गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

3. चारित्राचार

गुप्ति समितियाँ महाव्रतोंमय, तेरह विध चारित्र।
दोष रहित पाले पलवाते, जैनाचार्य पवित्र॥
शुभ चारित्राचार पूज लो, विद्या गुरु के धाम।
सदाचार के फूल खिला लो, करके विनत प्रणाम ॥ 25॥

ॐ ह्रूं मिथ्याचारित्र भ्रान्ति विनाशक चारित्राचार गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

4. तपाचार

दोष रहित बारह तप वाला, सुन्दर जिनका हार।
खुद सजते सबको सजवाते, गुण मंडित शृंगार॥
तपाचार की महिमा गालो, विद्या गुरु के धाम।
सदाचार के फूल खिला लो, करके विनत प्रणाम॥ 26॥

ॐ ह्रूं कुतप भ्रान्ति विनाशक तपाचार गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

5. वीर्याचार

निजी शक्ति को बिना छिपाये, करते धार्मिक कार्य।
खुशी-खुशी उपसर्ग परीषह, सहते श्री आचार्य॥
पाँचों वीर्याचार पूज लो, विद्या गुरु के धाम।
सदाचार के फूल खिला लो, करके विनत प्रणाम॥ 27॥

ॐ ह्रूं साहस प्रदाता वीर्याचार गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

छह - आवश्यक

1. समता/सामायिक आवश्यक

शत्रु मित्र में वन भवनों में, सुख दुख में सम भाव।
त्रय संध्या में त्रय योगों को, साधे सदा स्वभाव॥
सामायिक से ममता टारें, विद्या मुनि आचार्य।
गुण संतोष महाधन दीजे, भक्तों को गुरुआर्य॥ 28॥

ॐ ह्रूं संतोषसुखप्रदाता सामायिक-आवश्यक गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

2. स्तुति/वन्दना आवश्यक

चौबीसों तीर्थङ्कर में से, किसी एक का गान।
थुती वन्दना नित करके गुरु, करें कर्म का हान॥
वन्दन करके क्रन्दन हरते, विद्या मुनि आचार्य।
सुयश कीर्ति धर धर्म छाँव दो, भक्तों को गुरु आर्य॥ 29॥

ॐ ह्रूं अपयशनाशक-स्तुति/वन्दना-आवश्यक गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

3. वन्दना/स्तवन-आवश्यक

आदिनाथ से वीरनाथ तक, जो जिनवर चौबीस।
थवन वन्दना अर्हत् गाथा, गाके टेकें शीश॥

सिद्ध परम पद पाने चलते, विद्या मुनि आचार्य।
वीणा सुर अध्यात्म गीत दो, भक्तों को गुरुआर्य॥ 30॥

ॐ ह्रूं आधि-व्याधि-उपाधि नाशक वन्दना/स्तवन-आवश्यक गुण समन्विताचार्य ..... मुनीन्द्राय....

4. प्रतिक्रमण आवश्यक

भूतकाल के दोष हरण को, प्रतिक्रमण का काम।
कम से कम त्रय बार सँभाले, करे शुद्ध परिणाम॥
पश्चाताप आग में चमके, विद्या मुनि आचार्य।
भूलाज्ञान प्रमाद हरो सब, भक्तों के गुरुआर्य॥ 31॥

ॐ ह्रूं समाधि बल प्रदायक-प्रतिक्रमण-आवश्यक गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय.....

5. प्रत्याख्यान आवश्यक

भाविकाल में होने वाले, दोषों का परिहार।
योग सँभाले विषय निवारे, आतम सुहित विचार॥
ज्ञान ध्यान से सावधान हो, विद्या मुनि आचार्य।
मन की गाँठे वैर हरो सब, भक्तों के गुरुआर्य॥ 32॥

ॐ ह्रूं बैरविरोधविनाशक-प्रत्याख्यान-आवश्यक गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय.....

6. कायोत्सर्ग आवश्यक

ममता हर के समता धर के, करते कायोत्सर्ग।
अचल मेरू सम अचल हुये गुरु, करे निजी संसर्ग॥
धरे भेद विज्ञान महागुण, विद्या मुनि आचार्य।
खुशी-खुशी आवश्यक पालें, भक्तों के गुरुआर्य॥ 33॥

ॐ ह्रूं स्वार्थ निवारक कायोत्सर्ग आवश्यक गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय .....

तीन गुप्तियाँ

1. मनोगुप्ति

राग द्वेष मद मोह पाप जो, बढ़ा रहे संसार।
उनसे आतम रक्षित करना, कही गुप्ति हितकार॥
पाप छोड़ कर मनोगुप्ति को, धारे जैनाचार्य।
प्रेम दया करुणा मैत्री के, विद्या गुरु के कार्य ॥ 34॥

ॐ ह्रूं विघ्नभय विनाशक मनोगुप्ति गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

2. वचनगुप्ति

हाथ पैर से रहित शब्द पर, करवाते संग्राम।
दिये महाभारत की पीड़ा, त्यागे मौनी राम॥
निज रक्षा को वचन गुप्ति को, धारे जैनाचार्य।
प्रेम दया करुणा मैत्री के, विद्या गुरु के कार्य॥ 35॥

ॐ ह्रूं वचन विवाद विनाशक वचन गुप्ति गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

आँधी तूफां उपसर्गों में, रहते अचल अडोल।
शान्त ठूँठ सी मुद्रा लखकर, करते पशू खिलोल॥
निज रक्षा को काय गुप्ति को, धारे जैनाचार्य।
प्रेम दया करुणा मैत्री के, विद्या गुरु के कार्य॥ 36॥

ॐ ह्रूं कायवेदना विनाशक कायगुप्ति गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अर्घं .....

अथ तृतीयवलय जयमाला

ज्ञानदूत विद्यागुरु, रहते देहातीत।
रूप भेदविज्ञान को, वन्दन हो अगणीत॥
जय-जय-जय गुरुदेव नमस्ते,
विद्या गुरु-गुरुदेव नमस्ते।
ज्ञान सिन्धु के शिष्य नमस्ते,
उज्ज्वल भाग्य भविष्य नमस्ते॥
तीर्थङ्कर सा रूप नमस्ते,
विद्या गुरु जग भूप नमस्ते।
गुरु की महिमा अजब निराली,
दिवस दशहरा रात दिवाली॥
चरण शरण का मोल क्या, गुरु मूरत अनमोल।
उन्मीलित नयना करें, गुरु की जय-जय बोल॥
ज्ञान नयन गुरु जिनके खोलें,
उनको देव पूजने डोलें।
चरणों में दुनिया झुक जाती,
जिन्हें कृपा गुरु की मिल जाती॥
गुरु गुण रत्नों के भण्डारी,
मन वच तन से हैं अविकारी।
करुणा मूरत गुरु वैरागी,
हमें लगन गुरुपद से लागी॥
तीर्थङ्कर के रूप हैं, धर्म ध्वजा की शान।
भुक्ति मुक्ति दातार हैं, विद्या गुरु भगवान॥
कीच बीच में कमल सरीखे,
तोता हंसा सम गुरु नीके॥
सूर्य चाँद गुरुवर से फीके,
रहे महा पर दिल में दीखें॥

कभी किसी से हा ना कहते,
और कभी भी ना ना कहते॥
कवच ढाल असि गुरु की देखो,
कहे अँगूठा छाप खुदी को॥
विद्यारथ पर ले चलो, हमें मुक्ति के धाम,
भक्त भावना क्या कहें ? शत-शत विनत प्रणाम॥

ॐ ह्रूं मूलदोषनाशक षट्त्रिंशत्गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर तृतीय वलय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्दों के लालित्य हैं, हितकर गुरु साहित्य।
मीत प्रीत संगीत है, गुरु शिव के राहित्य॥
विद्या विद्या दे करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजन भगवान॥

(शान्तिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पदलाय।
भव दुःखों को मेट दो, हे विद्या गुरुराय॥

(पुष्पाञ्जलिं)

जाप्य - ॐ ह्रूं षट्त्रिंशत्गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागराय नमो नमः॥

(9, 18, 27, 36, 54 या 108 बार)

समुच्चय जयमाल

(लय - भक्तामर मंगल गीतावत्)

विद्या गुरु की चरण-शरण में, आयी भक्तों की टोली।
दर्शन वन्दन अर्चन करके, जोड़-जोड़ से जय बोली॥
विद्या गुरुवर जयवन्ता,
संत शिरोमणि भगवन्ता।
भक्तों के गुरुवर स्वामी,
ज्ञानी गुरु अन्तरयामी॥
विद्या गुरुवर जी प्यारे,
ज्ञान ज्योति से उजयारे।
मंगलमय गुरु का द्वारा,
जग का करते उद्धारा॥
बड़े पुण्य से गुरुवर जी के, दर्शन हमको मिल पाते।
चरण शरण की बात कहें क्या ? हृदय कमल झट खिल जाते॥ 1॥

जिनके हृदय कमल में गुरु का, ज्ञान सूर्य रोशन होता।
लम्बी गम की शाम उन्हीं की, दूर हुयी, क्रन्दन खोता॥
बुझी बुझी ना दीवाली
खुशी खुशी हो खुशहाली॥
कृपा मेघ से हरयाली
पीलो गुरुपद की प्याली॥
कल्पवृक्ष सम कल्पित दो
चिन्तामणि सम चिन्तित दो॥
कामधेनु से बढ़कर हो
पारसमणि से उज्ज्वल हो॥
जिनके सिर पर हाथ रखें गुरु, मनवांछित फल मिल जाते।
चरण शरण की बात कहें क्या ? हृदय कमल झट खिल जाते॥ 2॥
परमानंद गंध से महके, भक्तों का संसार अरे।
मन भौरा गुरु पद में रमके, चंचलता की मार हरे॥
सौम्य शान्त गुरु मूरत है।
न्यारी सीरत सूरत है॥
साँचे हो त्यौहार तुम्हीं।
सद्गुण के भण्डार तुम्हीं॥
मन वीणा के तार तुम्हीं।
शब्द गीत सुर तान तुम्हीं॥
प्राणों के विश्वास तुम्हीं।
भक्तों के संन्यास तुम्हीं॥
गुरुवर का अभिनन्दन करके, दिल वाले मंजिल पाते।
चरण शरण की बात कहे क्या ? हृदय कमल झट खिल जाते॥3॥
आँधी तूफां चट्टानें भी, गुरु स्वागत में आतुर रे।
समता का साम्राज्य देखकर, मेघ घटाएँ कातर रे॥
मन्द मधुर मुस्काते हो,
मोहक प्रेम लुटाते हो॥
सब कुछ गिरबी रख लीना,
जब जाकर दर्शन दीना॥
चमक तुम्हारी आँखों में,

प्यार तुम्हारी डाटों में॥
वाणी में कल्याण भरा।
मन से करुणा स्रोत झरा॥
जिधर जिधर मुख करते जाते, उधर-उधर पट खुल जाते।
चरण शरण की बात कहें क्या, हृदय कमल झट खिल जाते॥ 4॥
प्यास बुझे ना सागर से पर, बुझे प्रेम की सागर से।
नदियाँ खुद जीवन पाती हैं, आकर विद्यासागर से॥
हिन्दु तुमको कहते राम।
पंथों से गुरु का क्या काम॥
करो काम तुम काम तमाम।
गुरुचरणों में चारों धाम॥
गुण छत्तीस छोड़ स्वामी
गुण छत्तीस धरे स्वामी॥
तजे आँकड़े सब छत्तीस,
भाव तिरेसठ सम आशीष॥
विद्यापद की नैया द्वारा, भवसागर तट मिल जाते।
चरण शरण की बात कहे क्या ? हृदय कमल झट खिल जाते॥ 5॥
भाव आपके भक्ति आपकी, गीत हमारे बन जाते।
गुरु कृपा से हम मुस्काते, दीप हमारे जल जाते॥
गीत प्रीत संकल्प सभी,
गुरु बिन कायाकल्प नहीं॥
गुरु बिन सभी अधूरा रे,
गुरु शूरों के शूरा रे॥
तेरे फूलों काँटो से,
प्यार प्यार से डाँटों से,
धूप छाँव दे, आँसु हँसी।
सब सह लेंगे खुशी-खुशी॥
कमती कृपा नहीं गुरुवर की, भक्ति गीत ''सुव्रत'' गाते।
चरण शरण की बात कहें क्या ? हृदय कमल झट खिल जाते॥6॥

(दोहा)

भक्ति सुमन की थाल ले, गाये पूजा पाठ।
शीश विनय से टेकते, अजब गजब गुरु ठाठ॥

ॐ ह्रूं बोधिसमाधि रूप परमसुखप्राप्तये षट्त्रिंशत्गुण समन्विताचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय समुच्चय जयमाला पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

श्री विद्यासागर, ज्ञान दिवाकर, गुण रत्नाकर, गुरु स्वामी।
हे धर्म धुरन्धर, जग क्षेमंकर, रहे निरम्बर, शिवगामी॥
हम करें वन्दना, चरण अर्चना, नाथ हमारे, कष्ट हरो।
ये अर्जी हमारी, मर्जी तुम्हारी, हम भक्तों को, नहिं विसरो॥
विद्या विद्या दे करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पाञ्जलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, हे विद्या गुरुराय॥

(पुष्पाञ्जलिं)

॥ इति आचार्य श्री विद्यासागर गुरुविधान समाप्तं॥

प्रशस्ति

(दोहा)

बड़े दिनों का स्वप्न था, आज हुआ साकार।
गुरु महिमा कुछ गीत का, पाया हर्ष अपार॥ 1॥
रामटेक के शांतिजिन, गुरु विद्या वरदान।
भक्ति पुष्प ''सुव्रत'' खिले, गुरु का रचे विधान॥ 2॥
मंगल को मंगल हुआ, दीवाली को ठाठ।
अक्टूबर अठबीस को, दो हजार सन आठ॥ 3॥
टूटे फूटे शब्द हैं, पर है भक्ति अथाह।
विद्यारथ हमको मिले, मिले प्रेम की राह॥ 4॥
विघ्न कष्ट जग के टलें, मिटे आपसी बैर।
यही भावना पूर्ण हो, मंगलमय हो खैर॥ 5॥

(पुष्पाञ्जलिं)

(इति शुभं भूयात्.....)

गुरु गीत

(लयः रात कली इक ...)

रात गुरुजी सपने में आये, हमरे सिर पर हाथ रखे।
हमको अपना शिष्य बनाके, जनम-जनम हमें साथ रखे॥ 1॥

चाहे तजो हमें, चाहे भुला दो, चाहे हमें अपना लो।
कोई शिकायत, हम ना करेंगे, चाहे तो आजमा लो॥ 2॥
हरदम ये माथा, तुमको झुकेगा, ऐसे हम जज्बात रखे॥ रात....

सपनों में पूजा, हमने तो करली, श्रद्धा से चरणा धुलाये।
नजरे उठा के, झोली भरे गुरु, हमको हँसा मुस्काये॥ 3॥
हमने चढ़ायी, भक्ति की माला, स्वामी मन की बात रखे। रात....

बिना तुम्हारे, सब कुछ अधूरा, गाना सुर संगीत तुम्हीं।
मन का ये पंछी, तुम को तलाशे, प्रीत तुम्हीं मन मीत तुम्हीं॥ 4॥
चिन्ता डर कैसा, उनको अब जो, दिल में गुरु सौगात रखे। रात...

चाहे कहो इसे, पागल पन हमरा, चाहे समझ लो पूजा।
हम हैं अकेले, गुरु दो सहारा, तुम सा दयालु न दूजा॥ 5॥
अर्जी हमारी, मर्जी तुम्हारी, हम तो बस फरयाद रखे। रात.....

❑❑❑